International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 08-11-2025, Accepted: 07-12-2025, Published: 22-12-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 65-68

मध्यकालीन मणिपुरी साहित्य में आगत शब्दों के प्रभाव

पेबम निर्मला
सहायक आचार्य, राजकीय हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, इम्फाल, मणिपुर, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध आलेख "मध्यकालीन मणिपुरी साहित्य में आगत शब्दों के प्रभाव" में मणिपुरी भाषा में बाहरी भाषाओं से आए शब्दों की ऐतिहासिक, सामाजिक और भाषिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया गया है। भाषा की परिवर्तनशील प्रकृति को आधार बनाकर यह बताया गया है कि 18वीं से 19वीं शताब्दी के मध्यकाल में मणिपुरी भाषा ने संस्कृत, बांग्ला, हिंदी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी भाषाओं से अनेक शब्द ग्रहण किए। यह शब्द–ग्रहण केवल संयोग नहीं, बल्कि धार्मिक परिवर्तन, सामाजिक संपर्क, व्यापारिक संबंध, राजनीतिक परिस्थितियों तथा प्रशासनिक आवश्यकताओं के कारण हुआ।
महाराजा भाग्यचंद्र के काल में हिंदू धर्म के प्रसार के साथ रामायण, महाभारत तथा वैष्णव धर्मग्रंथों के पुनर्लेखन और अनुवाद के कारण संस्कृत और बांग्ला शब्दों का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। इसी काल में पान्थोइबी खोंगूल, चायनरोल, चौथारोल कुम्बाबा, सनामही लाइकन, तथा तखेल–ङम्बा जैसे ग्रंथों में बाहरी शब्दों के प्रयोग स्पष्ट मिलते हैं। आलेख में रूप–अपरिवर्तित, रूप–परिवर्तित तथा मिश्रित संरचनाओं का वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह पता चलता है कि कुछ शब्द मूल रूप में स्वीकार किए गए, जबकि कुछ मणिपुरी ध्वनि–प्रणाली के अनुरूप परिवर्तित हुए।
असम और बंगाल के साथ संपर्क और बाद में अंग्रेज़ों के आगमन ने फ़ारसी और अंग्रेज़ी शब्दों को भी भाषा में स्थान दिया। प्रशासन, युद्ध, न्याय व्यवस्था और शिक्षा से जुड़े शब्द इस प्रभाव के प्रमाण हैं।
अंतः शोध में यह सिद्ध होता है कि मध्यकालीन मणिपुरी साहित्य भाषाई संपर्क और सांस्कृतिक अंतःक्रिया का परिणाम है, जिसमें आगत शब्द केवल बाहरी प्रभाव नहीं बल्कि भाषा की समावेशी प्रवृत्ति, सांस्कृतिक अनुकूलन और ऐतिहासिक विकास के प्रतीक हैं। यह प्रक्रिया आधुनिक मणिपुरी भाषा की शब्द–संपदा और साहित्यिक शैली के निर्माण में महत्वपूर्ण रही।

मूल शब्दः मध्यकालीन मणिपुरी साहित्य, आगत शब्द, भाषाई संपर्क, संस्कृत एवं बांग्ला प्रभाव

प्रस्तावना

मध्यकाल (18वीं – 19वीं शताब्दी तक)

मनुष्य द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ निरंतर परिवर्तनशील होती हैं। बदलते समाज और परिवर्तित होती संस्कृति के प्रभाव से किसी भी भाषा में समय–समय पर अनेक नए शब्दों का समावेश होता है, जबकि कुछ शब्द प्रचलन से बाहर हो जाते हैं। सामाजिक, धार्मिक, व्यापारिक तथा राजनीतिक कारकों के माध्यम से समाज के ऐतिहासिक विकासक्रम में अनेक बाहरी भाषाओं का भी प्रभाव देखा गया है। इन प्रभावों के कारण कुछ शब्द बिना किसी परिवर्तन के भाषाओं में सम्मिलित हो गए हैं, जबकि कुछ शब्द समाज की आदतों और प्राकृतिक परिवेश के अनुरूप रूपांतरित होकर स्वदेशी स्वरूप ग्रहण कर चुके हैं।
मणिपुरी भाषा तिब्बती–बर्मी समूह के अंतर्गत आती है। यह भाषा सीनो–तिब्बती नामक विश्व के प्रमुख और विशाल भाषा–परिवार की एक महत्वपूर्ण शाखा है। किसी भी भाषा में दूसरी भाषा के तत्वों का प्रवेश मुख्यतः सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप होता है। विशेष रूप से समाज में अंतः क्रियाओं, व्यापारिक संपर्कों, प्रवासन, विवाह–संबंधों, धार्मिक प्रसार तथा प्रशासनिक प्रभावों के माध्यम से बाहरी भाषाओं के शब्द, ध्वनियाँ और व्याकरणिक तत्व लक्ष्य–भाषा में धीरे–धीरे समाहित हो जाते हैं। मणिपुरी भाषा में भी यही प्रक्रिया विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में निरंतर रूप से देखी गई है।
किसी भी भाषा में दूसरी भाषा के तत्वों का प्रवेश मुख्यतः सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। विशेष रूप से तब, जब समाज में नई भाषा का प्रयोग आवश्यक हो जाता है अथवा जब किसी भाषा का उपयोग सामाजिक प्रतिष्ठा, सम्मान या उच्च सांस्कृतिक स्तर का प्रतीक माना जाने लगता है। इसी प्रकार की परिस्थितियों के कारण मणिपुरी भाषा में भी बाहरी भाषाओं का प्रभाव क्रमशः बढ़ता गया। सत्रहवीं शताब्दी के आसपास मणिपुरी साहित्य पर इंडो–आर्यन भाषाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगता है। उस समय के विभिन्न ग्रंथों में बाहरी शब्दों के रूप–परिवर्तन के साथ–साथ बिना परिवर्तन के भी उपयोग के उदाहरण प्राप्त होते हैं। उदाहरण स्वरूप, लैथक लैखारोल में लाखा, समुद्र, गरुड़, घंटा, गुणा, हेरामनिक आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। इसी प्रकार, पान्थोइबी खोंगूल में गंगा, काटि, छोटा, आदि शब्द तथा चायनरोल में युवराज और साक्षी जैसे शब्द रूपांतरित अथवा अपरिवर्तित दोनों रूपों में प्रयुक्त हुए हैं।
केवल साहित्यिक ग्रंथ ही नहीं, बल्कि उस काल के ऐतिहासिक दस्तावेज चौथारोल कुम्बाब में भी बाहरी भाषाओं के प्रभाव के प्रमाण मिलते हैं, जहाँ हवा, मुक्त, पवन, प्रतिकार आदि शब्द हाथियों के नाम के रूप में दर्ज हैं। ये सभी उदाहरण मणिपुरी भाषा में इंडो–आर्यन प्रभाव के क्रमिक और गहन प्रवेश को रेखांकित करते हैं।
मणिपुर में बाहरी भाषाओं–विशेषतः संस्कृत और बंगला–का प्रभाव मुख्य रूप से 18वीं शताब्दी के प्रारंभ से देखा जाता है, जब मैतै समुदाय के लोगों ने व्यापक रूप से हिंदू धर्म को स्वीकार करना आरंभ किया। नए धर्म के प्रसार और धार्मिक ग्रंथों को आम जन तक पहुँचाने की आवश्यकता के परिणामस्वरूप रामायण की सात खण्डों तथा महाभारत के विभिन्न चयनित अध्यायों को मैतै भाषा में पुनर्लिखित किया गया। इसी क्रम में हिंदू धर्म से संबंधित आचार–विचार, सामाजिक व्यवहार और धार्मिक मूल्यों को जनसाधारण में स्थापित करने के उद्देश्य से लक्ष्मीचरित्र, ध्रुवचरित्र, चराइरोङबा खोंगुल जैसे ग्रंथों का भी अनुवाद अथवा रूपांतरण किया गया। इन ग्रंथों का लेखन तत्कालीन महाराजाओं की स्वीकृति एवं संरक्षण में संपन्न हुआ, जिनमें लेखक के नाम और लेखन–तिथि भी उल्लिखित मिलते हैं।
इस प्रकार, हिंदू धर्म से संबंधित साहित्यिक परंपरा के उदय के साथ मणिपुरी भाषा में संस्कृत और बांग्ला के अनेक शब्द,

व्याकरणिक संरचनाएँ तथा शैलीगत विशेषताएँ समाहित होने लगीं। समाज के धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूपांतरण में नई भाषाओं की आवश्यकता बढ़ी, जिसके परिणामस्वरूप इंडो–आर्यन भाषाओं के अनेक शब्द मणिपुरी भाषा में सम्मिलित किए गए। अतः यह कहा जा सकता है कि मैतै लेखकों द्वारा बाहरी भाषाओं का उपयोग मुख्यतः समाज की बदलती परिस्थितियों, समय की आवश्यकताओं तथा नए धार्मिक संदर्भों के अनुरूप अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण रूप से किया गया। उदाहरणस्वरूप, मध्यकालीन मणिपुरी साहित्य की विभिन्न रचनाओं में बाहरी भाषाओं के प्रभाव के कारण मणिपुरी भाषा में हुए रूपात्मक एवं शब्दावली परिवर्तनों का अवलोकन निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

> श्रीगुरु थोखोङ्बा, ईश्वर मपूबेन निब (नील) हकचाङ् छङबान्नबा, जयाटि मङाल अराबना, टन्त्र कोरी थोकफबा ..... कूबङ्ग छजि मिट्टाना ... छिखि चन्द्रिका वाहोङ् टू निङ्थोना ... (धन : लाइ, नीङ्) | कर्ण नाकोङ् पीना नाटारबदि दुख अवाबनाचिङ्बा कूष्टि लाइथूङ् अयाम्बा खैबिकपू कोकट हायरमद | सम्पूर्ण मपूङ्फाना महे चून्ना यान्नइ (लक्ष्मिचरित्र : पृ. 11) (पोलेम नबचन्द्र पृ. 80)

काले अक्षरों में दर्शाए गए सभी शब्द बाहरी भाषाओं से ग्रहण किए गए हैं। इन शब्दों के आधार पर उस समय की भाषा में अन्य भाषाओं के मिश्रित स्वरूप को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। तथापि, बाहरी भाषाओं के शब्दों के आने से पूर्व प्रचलित स्वदेशी शब्दों और उनके प्रयोग में उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं मिलता; वे अपने पारंपरिक रूप और संरचना में निरंतर उपयोग होते रहे।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मणिपुर का अहोम राज्य के साथ गहरा राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संबंध स्थापित हुआ। महाराज भाग्यचंद्र के असम प्रवास से लौटने के पश्चात् अहोम प्रशासनिक व्यवस्था के 'बाझख्वा पथ' को मणिपुर में भी अपनाया गया। इसी काल में मणिपुर ने ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ 1762 में प्रथम बार कूटनीतिक संबंध स्थापित करने का प्रयास किया, जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेज़ी तथा अन्य बाहरी भाषाओं के अनेक शब्द मणिपुरी भाषा में प्रवेश करने लगे।

मणिपुरी भाषा में बाहरी भाषाओं, विशेषतः संस्कृत से आए शब्द अत्यधिक मात्रा में पाए जाते हैं। तथापि बांग्ला भाषा के माध्यम से प्रवेश करने वाले संस्कृत–निष्पन्न शब्दों में ध्वन्यात्मक अथवा रूपात्मक परिवर्तन भी दृष्टिगोचर होते हैं। मणिपुरी साहित्य में विशेष रूप से 18वीं और 19वीं शताब्दी के ग्रंथों में रूप–परिवर्तित तथा रूप–अपरिवर्तित दोनों प्रकार के शब्दों के उदाहरण उल्लेखनीय रूप से मिलते हैं।

1. रूप–अपरिवर्तित शब्द

अंतर, अपराध, आनंद, उत्तम, एकांत, चिंता, मित्र, विश्व, समुद्र, समुदाय, चिट्ठी, मुक्ति, मूर्त, मृत्यु, माया, शब्द, गुरु, अंत, सिंदूर, दूत, तेज, त्रिभुवन, कक्ष, यात्रा, महापुरुष, महोदय, राहु, वेद, पुराण, पाठ, शास्त्री, प्रसाद, धर्म, शांति, वेश, व्रत आदि।

2. रूप–परिवर्तित शब्द

खेर (खीर), सापोन (साबुन), दखिना (दक्षिणा), कालाकार (कलाकर), क्वाक (कौवा), खेत्री (क्षेत्री), खेची (खिचड़ी), बामोन (ब्राह्मण), जूग (जग), जोबोन (योवन), दोलाइ (पालकी) आदि।

3. रूप–परिवर्तित तथा रूप–अपरिवर्तित संरचनाओं में मिश्रित उपयोग

धनी–इनाकखूनबा, आसोन–चौक्री, सत्य–सखी, पुरुष–निपाथोकप, अस्त मंगल–नीपाल, श्याम–संबान्नबा, वेद–लाइरिक, हंस–काङ, सन्यासी–खूनकोइबा, छंद–खोनजेल, कमलूज–मितलु थम्बाल मका मानबा, यंत्र–पेना, हेला–उसित् थोउइदबा, पंक्ति–परेङ् तौना, जय–याईफमिङ् आदि।

4. फ़ार्सी से आए शब्द

अंग्रेज, विलाती, विलात, फिरंगी, जहाज, चाकर, नमूना, नगर, शनै, कोटि (कोंची), कारीगर, हफ्ता, दरबार, पुठि (लाइरिक, अरिब खूटइ लाइरिक, संस्कृत में पुस्तक, पुस्तका, पुस्तिका), फौज, देवान, मोहर, सरकार, आइन, अदालत, जवान, दरखास्त, सिपोय, खजना, काजी, महुरी, छंद, साहेब, जिला, अशरफी, जबान, माशुल, कुरता (तुर्की), फ़क़ीर, भूत, कमांड (बाद में बन्दुक को जाना जाता है), सरदार, कैदी, हजारी (हजारों योद्धाओं के शिर), सलामी, टॉप, किला, शाह, नाल, जन्जी, आदि |

5. अंग्रेज से आए शब्द

फोटो, ग्रेड, पिरेड, कंपनी, मैगज़ीन, जर्नल, कॉरनल, पीरियड, पेट्रोल, मेजर, कमीशन, ऑफिस, यूनिफार्म, स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, कार्ड, इंटरव्यू, आर्गेनाईजेशन, पॉलिटिक्स, एजेंट आदि |

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि मणिपुरी भाषा ने बाहरी भाषाओं के शब्दों को या तो मूल रूप में स्वीकार किया या स्थानीय ध्वनि–प्रणाली एवं भाषाई आदतों के अनुरूप परिवर्तित करके आत्मसात किया। यह प्रक्रिया उस काल के सामाजिक, धार्मिक और भाषाई संपर्कों की सक्रियता को भी दर्शाती है।

कई अवसरों पर बाहरी भाषाओं से आए शब्दों को मणिपुरी भाषा में अर्थ–अनुवाद के माध्यम से भी प्रयोग किया गया है। उदाहरणस्वरूप, चंद्रक्रीती जिला डमब में "फोटो खींचने" के लिए 'उनम तौबा'। यह प्रवृत्ति इस बात का संकेत है कि बाहरी भाषाओं के आगमन के साथ–साथ पूर्व–प्रचलित स्वदेशी शब्दों को भी आगत–भाव के रूप में नए अर्थ प्रदान करके उपयोग में लाया गया। मणिपुरी भाषा के 'प्रेम ताबा' का 'पिराङ ताबा' के रूप में प्रयोग इसी भाषाई अनुकूलन प्रक्रिया का उदाहरण है। इसी प्रकार, प्रेम – पिराङ, और मित्तगी प्रेम सिनथबा – मित्तगी पिराङ सिनथबा जैसे रूपांतरण भी भाषाई संपर्क के प्रभाव को दर्शाते हैं। इसके साथ ही, पहले से अस्तित्व में मौजूद भाषाई स्वरूपों में बाहरी भाषाओं के मिश्रण से उत्पन्न ध्वन्यात्मक और रूपात्मक परिवर्तन भी देखे जाते हैं। उदाहरणस्वरूप—जगोइ – चकोइ – चूकोइ, तथा ख्वाइरम्बन्द – खवाइलमपन—जैसे रूपांतर स्पष्ट रूप से भाषाई संपर्क और क्रमिक विकास की प्रक्रिया को रेखांकित करते हैं।

बाहरी भाषाओं के प्रभाव के परिणामस्वरूप पूर्व–प्रचलित स्थान–नामों में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। उदाहरणस्वरूप, लड्थबाल का रूपांतर कांचिपुर तथा लम्माड्दोड् का विष्णुपुर के रूप में प्रयुक्त होना उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त, हिंदू धर्मग्रंथों को मैतै भाषा में पुनर्लिखित किए जाने की प्रक्रिया के साथ–साथ उसी काल के अन्य मणिपुरी ग्रंथों में भी हिंदू धार्मिक साहित्य की इमेजरी (चित्रात्मकता/प्रतिमा–कल्पना) का व्यापक प्रयोग दिखाई देता है। यह प्रवृत्ति उस समय के सामाजिक–धार्मिक परिवर्तन और भाषाई–सांस्कृतिक परिवेश को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करती है।

मध्यकाल में पुनर्लिखित मणिपुरी प्राचीन ग्रंथों में भारतीय आर्य भाषाओँ के आगत शब्दों का भरमार प्रयोग हुआ है| मुख्यतः निम्नलिखित चार ग्रंथों को उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं –

1. सनामहि लाइकन,
2. चौथे थाङ्वाय पाखङ्पा,
3. तखेल–ङम्बा और
4. चौथारोल कूम्बाबा, आदि |

'सनामहि लाइकन'

'सनामहि लाइकन' नामक ग्रंथ मध्यकालीन, अर्थात् 18वीं शताब्दी में रचित माना जाता है। इस ग्रंथ में स्थान–स्थान पर संस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी दृष्टिगोचर होता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि उस समय के लेखकों में संस्कृत का ज्ञान रखने वाले विद्वान भी विद्यमान थे। यद्यपि ये ग्रंथ सीधे हिंदू धर्म से संबंधित बाहरी ग्रंथों के मणिपुरी अनुवाद या पुनर्लेखन के अंतर्गत नहीं आते, तथापि इनमें इंडो–आर्यन भाषाओं के शब्द पर्याप्त रूप से सम्मिलित हैं। इस प्रकार की भाषिक प्रवृत्ति उस समय के साहित्यकारों की भाषिक सजगता तथा बहुभाषिक दक्षता का संकेत प्रदान करती है।

"लम्बोइ लाइबू निङबा शांतिदास कौबा असिबू शिलोट मपूङ्वाइगी हिन्दू आचार लमचट हापना क्षत्रीय वंश शाखै लेपहनगे हायना लोइबि चीङ्खोङ् लान्ना पाऊकौरूबदि खोइयम मुक्ति इहकशाङबू नूङ्थङ् चौखाखोन अरूम्बा लान्नङ्जगे हायबगी पाऊकौरूबा मउइरे |"(सनामही लाइकन, पृ.67)

ऊपर काले अक्षरों में उल्लेख किए गए शब्द संस्कृत तथा मणिपुरी भाषा के मिश्रित रूप है |

चौथे थाङ्वाय पाखङ्पा

18वीं शताब्दी में रचित ग्रंथों में यह ग्रंथ भी सम्मिलित है, किन्तु इसकी भाषा में कुछ जटिलताएँ अवश्य पाई जाती हैं। समय के साथ भाषिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप मणिपुरी भाषा में संस्कृत और बांग्ला भाषाओं के शब्द बोलचाल और लेखन में प्रचलित होने लगे। इसी प्रभाव के कारण इस ग्रंथ में भी कुछ शब्दों में भाषाई मिश्रण के रूप स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

"श्रीहरी हयाहे हे लीकलाउ इपूङ्थौ नोङ्थौरेन,
वैष्णव थौङ्नाङ् मयाम्पा, चीङ्ङू ईन्द्र सॉरारेन, नमू
पौङ्हनबा, भक्ति ङक्कोइ थोङ्पू चृनपा, लाइरेन सना
नखोङ् थादा हयिङेगीबू नताइरेम तयम चीनकोइ
ईवाकमना हया लाऊना शथिरक्के |"(खेलचन्द्र, चोथे थाङ्वाइ पाखङ्पा, पृ.1)

उपर्युक्त उदाहरणों में काले अक्षरों में चिह्नित सभी शब्द संस्कृत मूल के हैं। इसकी एक विशेषता यह भी है कि पौराणिक मणिपुरी भाषा को आधुनिक भाषा–प्रयोग के साथ संयोजित कर प्रस्तुत करने की कला स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इतना ही नहीं, अन्य भाषाओं के शब्दों को भी मणिपुरी भाषा के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप में संयोजित कर लिखा गया है।

तखेल–ङम्बा

"तखेल–ङम्बा" ग्रन्थ का रचनाकाल हिंदू धर्म के आगमन और उसके प्रभाव के पूर्ण विकसित होने के पश्चात का माना जाता है। इसी कारण इस ग्रन्थ पर हिंदू धर्मशास्त्रों की छाप स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इसमें मणिपुरी भाषा के साथ बाहरी भाषाओं के मिश्रित रूपों का संयोजन करके ऐसे शब्द–युग्मों का निर्माण किया गया है, जो पाठकों के लिए ध्वनि, सुर और लय की दृष्टि से सौंदर्यात्मक आनंद उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार की भाषिक तकनीकों का प्रयोग इस ग्रन्थ की एक उल्लेखनीय विशेषता के रूप में देखा जा सकता है।

"...ब्राह्मण लाइउइबना खोइमोम मंत्र शोन आशीर्वाद याथङ्
याइफबना वर लनकूपिखिये | लाइबेल मैददिङ्डूदि श्री रामचन्द्र
लाइनिङ्थौबू ताङ्जा लूदा थोङ् नयू खोइमोम लाइनिङ्थौ
चिङ्ङू खायबबू काया माङ्उइनना शंख मोइबूङ् थिनकाम्बा पूङ्
पेरे... |" (एल. अशोक कुमार पृ.108)

चौथारोल कूम्बाबा

मैतै जनजाति के इतिहास और संस्कृति के प्रमुख ग्रंथ 'चेइथारोल कुम्बाबा' के प्रथम पृष्ठ पर, मैडिङ्ङू पाखङ्बा के काल से ही संस्कृत शब्दों के प्रयोग का उल्लेख मिलता है।

"श्री ताइबङ्पानबगी मपू नङबू खूरूमना चेइथारोल कुम्बाबबू
इजरक्के ताथिबीगनू | कलिगी कूमशीङ् 3135 शूबदा मैडिङ्ङू
पाखङ्बा निङ्थो उइए | पाखङ्बाना निङ्थो उइबा चही
45 शूरकपदा शकाब्द अमा होए" (चेइथारोल कुम्बाबा पृ.1)

ऊपर काले अक्षरों में लिखे गए शब्द 'श्री', 'कली' और 'शकाब्द' संस्कृत के शब्द हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि चेइथारोल कुम्बाबा के लुप्त होने के पश्चात इसे महाराजा भाग्यचंद्र (1761–1763 ई.) के काल में पुनः पूर्ण रूप में लिखा गया।
विशेषतः मैडिङ्गू टूबी चराइरोंबा (1698–1709 ई.) के शासनकाल में संस्कृत, बांग्ला आदि भाषाओं के शब्दों का प्रचुर प्रयोग साहित्य में मिलता है। इसके पश्चात मैडिङ्गू गंभीर महाराज (1826–1834 ई.) के समय से अंग्रेज़ी तथा फ़ारसी भाषा के कुछ शब्द भी साहित्य में परिलक्षित होने लगे। परिणामस्वरूप इस काल में मणिपुरी साहित्य में बाहरी भाषाओं से आए अनेक शब्द समाहित हुए। इस प्रकार मैडिङ्गू लाइरेन पाखङ्बा से लेकर मैडिङ्गू सूरचन्द्र तक की साहित्यिक परंपरा में मणिपुरी भाषा के साथ–साथ अन्य भाषाओं से आए शब्दों की उपस्थिति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इन बाहरी शब्दों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—

1. संस्कृत, बांग्ला तथा हिंदी से आए शब्द

कीर्तन, कृष्णा, गुरु, चिट्ठी, दक्षिणा, ड्यूटी, धर्म, निपुण, मुक्ति, यात्रा, युवराज, आदि |

2. अंग्रेज़ी भाषा से आए शब्द

स्कर्ट, एजेंट, कंपनी, मेजर, टेलीग्राम, रिपोर्ट, पोलिटिकल, आदि |

3. फ़ारसी (पर्शियन) भाषा से आए शब्द

सालामी, दरबार, फिरंगी, साहेब, आदि |

4. अरबी भाषा से आए शब्द

जिला |

19वीं शताब्दी के मध्य तक आते–आते मणिपुर के इतिहास पर आधारित मणिपुरी साहित्य में राज्य और उसकी भूमि से संबंधित अनेक ग्रंथों की रचना की गई। इनमें से उदाहरणस्वरूप कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

1. गंभीर सिंह नोङ्गाबा

यह ग्रंथ लौरेम्बम दयाराम एवं निङ्थौजम नबश्याम पंडित दोनों द्वारा संयुक्त रूप से लिखा गया है। इस ग्रंथ की भाषा और शैली का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह पौराणिक मणिपुरी भाषा में रचित है। साथ ही, इसमें स्थान–स्थान पर संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिससे इसकी भाषिक शैली और अधिक शास्त्रीय और औपचारिक बन जाती है।

"नशाबी ऐदि चेङ्लौ मितलम पाङबरमगी
श्री वृन्दावन शना लैमयोनगी चिङङू लाइफम
खूदिङ्दा नूङ्डाइ पूकनिङ् थूङ्नबा दर्शन तौना
खोइमोम पूकनिङ् लनशारूगे निङज पूकनिङ्..."(वाइ. ईबेमपिछक पृ.57)

2. शामू फाबा अमसूङ् गोविंद निरूपण

यह ग्रंथ श्री खेमाचंद्र सिंह द्वारा लिखा गया है। यह ग्रंथ पद्य–रचना में पौराणिक मणिपुरी भाषा के साथ–साथ संस्कृत शब्दों का भी स्थान–स्थान पर प्रयोग किया गया है, जिससे इसकी शैली अधिक शास्त्रीय और साहित्यिक प्रतीत होती है।

"तूबी फमथौ मङाइरोइ लाइरेन निङ्थौ महिशाङ्
लेङ्गा तिन ब्राह्मण पंडित नाकलौ शिन्न चिङ्ङू
मुक्ति महाकशाङ्बू शङ्शङ् लिङ्खतले।"(वाइ. ईबेमपिछक पृ. 61)

3. चन्द्रकृति जिला चङबा

यह ग्रंथ पंडित साराङ्थेम सुर्पानंद, थौदाम चाउबतोन खुन्द्राक्पम जयसिंह तथा युमलेम्बम पाखङलाकपा इन चारों द्वारा संयुक्त रूप से रचित है। इस ग्रंथ की भाषा में पौराणिक मणिपुरी के साथ संस्कृत शब्दों का निरंतर मिश्रण मिलता है, जिससे इसकी भाषिक संरचना विद्वतापूर्ण और पारंपरिक स्वरूप को दर्शाती है।

"जिला मपूङ्यायगी नमू मीयामगा पोइरैलम
अनिमागी मीयाम पून्ना तिन्नबदा लाइरेल मैदिङ्डून्ना
चिङङू विष्णु थोइथोइबगी आरती मतम तौबगी संक्रीतन...।"(वाइ. ईबेमपिछक पृ.67)

निष्कर्ष

उपरोक्त उल्लेखित ग्रन्थों में प्रयुक्त बाहरी भाषाओं के शब्दों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन मणिपुरी साहित्य में लेखकों ने मणिपुरी भाषा के साथ–साथ अन्य भाषाओं के शब्दों का भी व्यापक रूप से प्रयोग किया है। मध्यकालीन मणिपुरी साहित्य भाषाई संपर्क, सांस्कृतिक परिवर्तन और ऐतिहासिक परिस्थितियों से निर्मित एक विशिष्ट भाषिक विकास–यात्रा का साक्ष्य प्रस्तुत करता है। इस काल में मणिपुरी भाषा न केवल अपनी मूल संरचना और पहचान को बनाए रखती है, बल्कि बाहरी भाषाओं— विशेषतः संस्कृत, बांग्ला, हिंदी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी से शब्द ग्रहण कर अपने अभिव्यक्ति–क्षेत्र को भी व्यापक बनाती है। यह शब्द–ग्रहण आकस्मिक न होकर सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक आदान–प्रदान तथा ऐतिहासिक परिस्थितियों से प्रेरित एक क्रमिक भाषाई प्रक्रिया थी।

हिंदू धर्म के आगमन, वैष्णव परंपरा के विस्तार, लेखन–पुनर्लेखन की परंपरा तथा बंगाल और असम के साथ बढ़ते धार्मिक एवं सांस्कृतिक संपर्क ने मणिपुरी भाषा को इंडो–आर्यन भाषाओं के शब्दों से समृद्ध किया। परिणामस्वरूप सनामहि लाइकन, तखेल–ङम्बा, चौथारोल कुम्बाबा आदि ग्रन्थों में बाहरी शब्दावली का उल्लेखनीय प्रयोग देखा जा सकता है। इन शब्दों का प्रयोग केवल अनुवाद या उधार की प्रक्रिया के रूप में सीमित नहीं रहा, बल्कि कई शब्द स्थानीय ध्वन्यात्मक स्वरूप धारण कर रूपांतरण की अवस्था में पहुँच गए, जिससे मणिपुरी भाषा में भाषिक मिश्रण विकसित हुई।

इसके अतिरिक्त, मध्यकालीन साहित्य में रूप–अपरिवर्तित, रूप–परिवर्तित तथा अर्थ–अनुवादित शब्दों की उपस्थितियाँ यह दर्शाती हैं कि भाषा केवल शब्दों को ग्रहण ही नहीं करती, बल्कि उन्हें आत्मसात कर अपनी सांस्कृतिक और ध्वन्यात्मक प्रकृति के अनुरूप पुनर्संरचित भी करती है। अंग्रेज़ी और फ़ारसी से आए शब्दों का प्रशासनिक, सामाजिक और सैन्य संदर्भों में बढ़ा हुआ प्रयोग यह प्रमाणित करता है कि भाषा राजनीतिक परिवेश के साथ निरंतर बदलती रहती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि मध्यकालीन मणिपुरी साहित्य मात्र साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि भाषा–इतिहास का जीवंत दस्तावेज है, जिसमें आगत शब्द न केवल बाहरी प्रभावों के चिन्ह हैं बल्कि भाषाई लचीलापन, स्वीकार्यता और सांस्कृतिक एकीकरण के प्रतीक भी हैं। इस काल में विकसित आगत शब्दावली ने आधुनिक मणिपुरी भाषा की शब्द–संपदा, व्याकरणिक संरचना और साहित्यिक शैली के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसके वर्तमान भाषिक स्वरूप की आधारशिला स्थापित की।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पोलेम, नबचन्द्र। (2006). आरिब मणिपुरी साहित्यगी शकलोन. राइटर्स फोरम मणिपुर।
2. अशोक कुमार, एल। (2000). आरिब मणिपुरी साहित्यगी परीङ् (चहिचा 18 अमसूङ 19 गीदा मणिपुरी साहित्य)।
3. भोगेश्वर। सनामही लाइकन ।
4. खेलचन्द्र सिंह, एन। (1991). चोथे थाङ्वाइ पाखङ्पा तथा नूङ्पान पोम्बी लूवाऊपा, मणिपुर स्टेट कला अकादमी।
5. खेलचन्द्र, एन। (2004). आरिब मणिपुरी साहित्यगी इतिहास (तृतीय संस्करण) स्व–प्रकाशित, इम्फाल।
6. लाइरेनमयुम इबूङोहल एवं खेलचन्द्र, एन। (1967). चौथारोल कूम्बाबा. मणिपुर साहित्य परिषद।
7. अशोक कुमार, एल। (2016). मणिपुरी नाटकी पूवारी. जेनिफर, जेनिटा, शिवदत्त।
8. युमनाम ईबेमपिछक। (2022). तरामपल अमसूङ कूनछूबा चहीचादा मणिपुरी साहित्य. यू.के. प्रिंटर्स (जेनिफर, जेनिटा, शिवदत्त)।